व्यंग्य

राष्ट्र का नया बोध

एक रात मैंने विचित्र सपना देखा।

शहर के मैदान में केंद्र और राज्य के मंत्री फ़ौजी पोशाक पहने हाथों में तलवार लिए खड़े हैं। वर्दी शुद्ध खादी की है। उनके सामने मुनाफ़ाखोर, काला-बाज़ारी और अनाज दबाने वाले लाये जा रहे हैं और वे तलवार से उनका सिर काटते जाते हैं। बीच-बीच में लाउडस्पीकर पर घोषणा हो रही है - 'जाओ, जनता को भूखा मारने वालों, जनता के और दुश्मनों को हमारे सामने लाओ। हम उनका सिर काट लेंगे। जल्दी करो, हमें फ़िर दूसरे शहर जाना है।'

जनता जय बोल रही है। स्त्रियां आरती लिए खड़ी हैं कि ये सिर काटने से निपट जाएं, तो इनकी आरती उतारें।

मंत्रियों के चेहरे पर न घृणा थी, न क्रोध था। आंखों से प्रेम टपक रहा था। पचासों सालों की अहिंसा और प्रेम की ट्रेनिंग से यह अनुशासन आया था।

सुबह मैंने काका से इसका ज़िक्र किया। उन्होंने थोड़ी देर सोचा। फिर कहा-सपने का कारण तो साफ़ है। तुम रोज़ अख़बारों में मंत्रियों के धमकी-भरे वक्तव्य पढ़ते हो, इसलिए ऐसा सपना आया। मगर लक्षण अच्छे नहीं हैं।

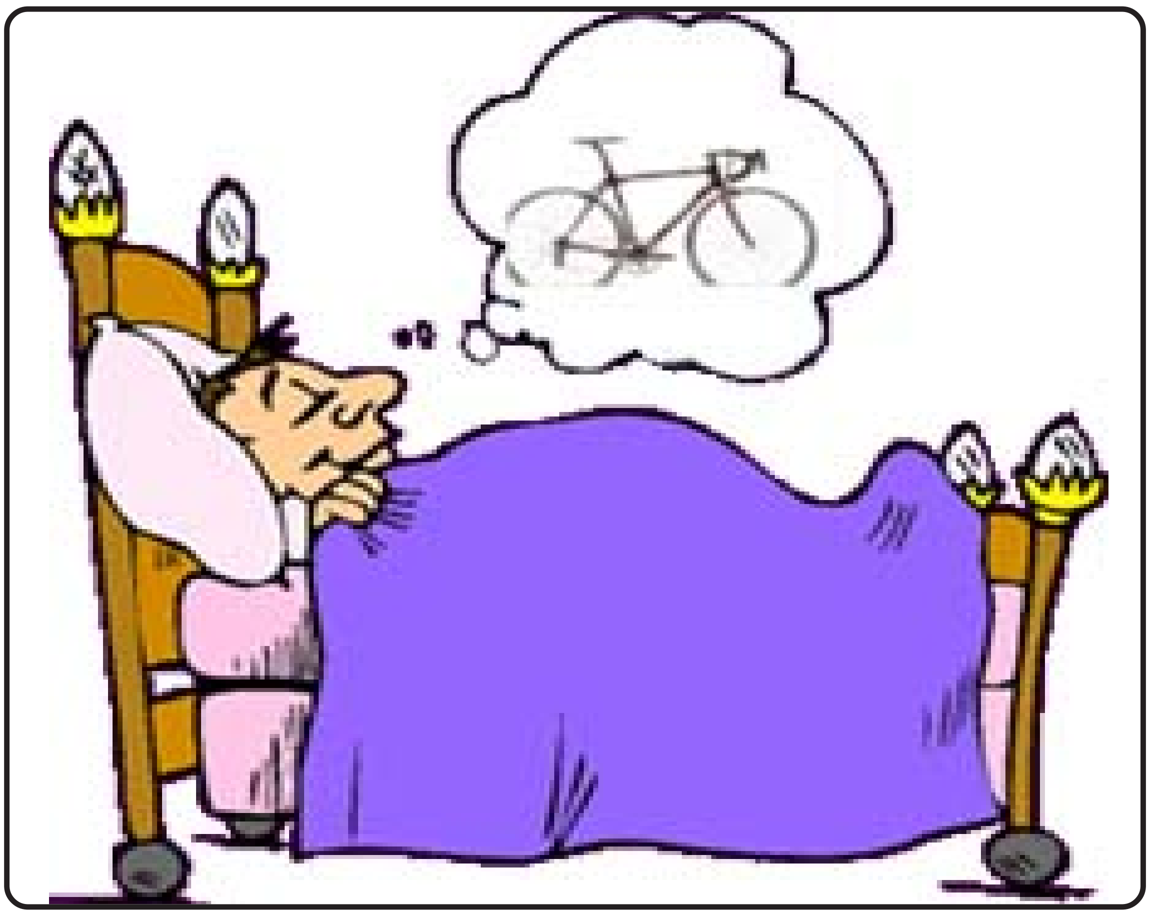

मैंने कहा - क्यों काका, इसमें क्या बुरा है। सपना यही तो संकेत करता है कि सरकार जनता के दुश्मनों का नाश करने के लिए कटिबद्ध है।

काका ज़ोर से हंसे। बोले-वाह, कटिबद्ध। बढ़िया शब्द तुमने कहा। सारी मुसीबत इसी शब्द की लाई हुई है। यही कुछ नहीं करने देता। मंत्रियों के वक्तव्य होते हैं कि हम ऐसा करने को 'कटिबद्ध' हैं। जानते हो, इसके बाद वे क्या करते हैं? धोती को कस लेते हैं और संतुष्ट होते हैं कि जो कहा था, वह कर दिखाया। कमर कसने का वायदा किया था, तो कस ली। बहुत से लोग इसी वायदे को निभाने के लिए ढीली धोती पहनते और 'कटिबद्ध' का वक्तव्य दे कर कस लेते हैं। कमर कसने वालों से हम परेशान हैं, मन कसने वाले चाहिए।

मैंने कहा - आप सपने का फलितार्थ बता रहे थे न।

वे बोले - हां, देखो, आयुष्मान, चुने हुए आदमी का फौजी पोशाक पहनना अशुभ संकेत है। और फिर जब मंत्री ख़ुद अपराधी का सिर काटे, तो मतलब हुआ कि शासन फेल हो गया। समझे? तुम ऐसे अशुभ सपने मत देखा करो। आदमी चाहे सोये नहीं पर उसे अपने सपने नहीं बिगाड़ने चाहिए।

मैं चुप हो गया।

काका बोले-सुन मत पड़ो। कुछ करो। देखो यह अख़बार। इसमें फिर प्रधानमंत्री से लेकर राज्य-मंत्रियों तक के वक्तव्य हैं कि किसी भी भ्रष्टाचारी को माफ़ नहीं किया जाएगा। कड़े से कड़ा दंड दिया जाएगा। जाओ, कुछ मुनाफ़ाखोरों को शासन के सुपुर्द कर आओ। ये लोग रोज़ जनता का सहयोग मांग रहे हैं।

शर्मा मास्टर ट्यूशन पढ़ा कर लौटते हुए खड़े हो गये थे। बोले - दो व्यापारियों को तो मैं जानता हूं जिनके पास अनाज दबा है। एक के पास लगभग पांच हज़ार बोरे और दूसरे के पास पांच सौ।

मैंने कहा - तो चलो अधिकारियों के पास। उन्हें अभी पकड़वा देते हैं।

शर्मा मास्टर ने आधे दिन की छुट्टी ली और मेरे साथ हो लिए।

चौराहे पर आये तो देखा कि पुलिस बहुत है और सवारियों को नियमित कर रही है। हम चौराहा पार करने लगे तो एक पुलिस इंस्पेक्टर चिल्लाया-ए, श्रीमानजी, अंधे हो क्या? दिखता नहीं है, रास्ता बंद है?

हम रुक गए। मैंने मास्टर से पूछा-आज ये लोग 'श्रीमानजी' क्यों बोल रहे हैं? सुनो, सबसे 'श्रीमानजी' कह रहे हैं।

मास्टर ने कहा-पुलिस का यह 'शिष्टाचार सप्ताह' चल रहा है। इस सप्ताह वे नागरिकों से बड़ा नम्र व्यवहार करते हैं। उन्हें सिखाया गया है कि हर आदमी को 'श्रीमानजी' कहना चाहिए।

एक राहगीर को पुलिस ने रोका और कहा - क्यों बे श्रीमानजी के बच्चे, देखता नहीं है, तेरे बाप यहां खड़े हैं?

एक आदमी सड़क के बीच से चलने लगा। पुलिसवाला चिल्लाया - ज़रा किनारे से चल, साले श्रीमानजी। पूरी सड़क श्रीमानजी के बाप की नहीं है।

हमारा रास्ता खुला। हम सीधे कलेक्टर के पास पहुंचे।

हमने कहा-सरकार ने जनता का सहयोग मांगा है। हम सहयोग देने आये हैं। ये मास्टर साहब दो व्यापारियों के पास अनाज दबा हुआ देख आये हैं। उन्हें फ़ौरन पकड़िये और अनाज ज़ब्त कर लीजिए।

कलेक्टर ने हमारा बड़ा आभार माना। कहने लगे-आप लोग जागरूक नागरिक हैं। आगे इतिहास में आपका नाम सोने के अक्षरों में लिखा जाएगा।

मैंने कहा-अपने इतिहास का भी ध्यान रखिए और सख़्त कार्रवाई करिए।

साहब ने कहा-ज़रूर, ज़रूर, मैं अभी जांच का आदेश देता हूं।

मैंने कहा-इसमें जांच की क्या ज़रूरत है, ये अभी देख कर आ रहे हैं।

साहब ने कहा-फ़िर भी जांच तो करनी ही पड़ेगी।

मैंने कहा-सामने गोदाम भरा पड़ा हो, तब भी जांच की जाएगी?

वे बोले-हां, जांच किए बिना कोई क़दम कैसे उठाया जाएगा? आप बेफ़िक्र रहिए। फ़ौरन जांच होगी और सख़्त क़दम उठाया जाएगा। आपको उसकी सूचना हमारे तरफ़ से मिलती रहेगी।

दूसरे दिन हमने इस उम्मीद से अख़बार उठाया कि उसमें उन व्यापारियों की गिरफ़्तारी का समाचार छपा होगा। समाचार नहीं था। सारा नगर पृष्ठ एक अपढ़ नेता के भाषण से भरा था, जिसमें उसने कहा था कि कालिदास को मैं भी अब बड़ा कवि मानने लगा हूं।

तीसरे दिन हमें एक पत्र की नक़ल मिली, जो शासन ने उन व्यापारियों को लिखा था। मज़मून यह था-

श्री सेठ अमुक जी,

शासन को कुछ लोगों ने सूचना दी है कि आपके पास अनाज का स्टॉक दबा है जिसे आप काला बाज़ार में बेच रहे हैं। वे आप पर कार्यवाही करने के लिए सरकार पर दबाव डाल रहे हैं। आपको सूचित किया जाता है कि हम आगामी एक सप्ताह तक जांच करेंगे। इन सात दिनों में आप बचाव के लिए जो करना चाहें, करें। पीछे शासन को दोष न दिया जाए कि आपको पहले बताया नहीं। एक सप्ताह बाद हम अचानक छापा मारेंगे।

मैं साहब के पास पहुंचा। उनसे कहा-यह क्या किया जा रहा है? उन्हें शासन ने बचने का वक़्त क्यों दे दिया?

साहब बोले-यह सरकार की नीति ही है। सरकार कायर नहीं है कि धोखे से किसी को जा कर पकड़ ले। सरकार बहादुर है। वह होशियार करके पकड़ती है। हमारा पुलिसमैन भी चोर पकड़ने जाता है तो सीटी बजाते हुए जाता है। वह चोर को चेतावनी देता है कि चोरी कर ली हो और बुज़दिल हो, तो भाग जा। बहादुर हो तो सामने आ जा।

मैंने कहा-लेकिन हुज़ूर, सरकार की बहादुरी चाहे इससे सिद्ध हो जाए, पर वे स्टॉक तो यहां-वहां कर देंगे। फ़िर क्या आप उनका ख़ाली गोदाम गिरफ़्तार करेंगे?

साहब ने कहा-देखते जाइए, क्या होता है। यह उचक्कों का काम थोड़े ही है कि चाहे जहां उचक कर पहुंच गए। एक गंभीर, प्रतिष्ठित सरकार का काम है।

मैंने पूछा-तो अब मैं क्या करूं?

साहब ने आश्वस्त किया-आपको कुछ नहीं करना है। अभी तो हमें भी कुछ नहीं करना है। जो करना है, उन व्यापारियों को ही करना है।

दो दिन बाद मुझे उन व्यापारियों की कैफ़ियत की नक़ल मिली।

पांच हज़ार बोरे वाले ने लिखा था-

-हमारी फ़र्म पर यह आरोप कुछ समाज-विरोधी तत्वों ने लगाया है। यह इल्ज़ाम कि हमारे पास अनाज का स्टॉक दबा है और हम काला बाज़ारी कर रहे हैं, सरासर झूठ है। हमारे कथन की सत्यता नीचे लिखे प्रमाणों से सिद्ध होती है-

1. नगरपालिका में इस समय सात सदस्य हमारे हैं। अगर हम नाराज़ हो गए, तो ये सातों सरकारी गुट के विरोध में हो जाएंगे। तब नगरपालिका सरकारी गुट के हाथ से निकल जाएगी।
2. एम.एल.ए. बांके बाबू पहले हमारे ससुर की दुकान पर मुनीम थे। आजकल उनकी अच्छी चल रही है। बांके बाबू के गुट में पंद्रह एम.एल.ए. हैं। इन्हीं के समर्थन से सरकारी पार्टी का यह गुट मंत्रिमंडल बना सका है। अगर बांके बाबू नाराज़ हो जाएं, तो इस गुट की सत्ता छिन जाएगी। उनका चुनाव-ख़र्च हम देते हैं और जाति-बिरादरी के वोट भी दिलाते हैं। बांके बाबू ने फ़ोन पर राजधानी में हमारी बात कह दी है।
3. हम पार्टी फंड में और हर चुनाव फंड में भरपूर चंदा देते हैं।
4. जब खाद्यमंत्री आए थे, तब हमने उनके सम्मान में दावत दी थी।

इन तथ्यों से प्रमाणित होता है कि मेरे पास अनाज का एक दाना भी दबा हुआ नहीं है। यदि फ़िर भी हम पर शक़ हो राजधानी से पूछ लिया जाए।

पांच सौ बोरे वाले ने कैफ़ियत दी-

-हम छोटे व्यापारी हैं फ़िर भी हम नियमों का पूरी तरह पालन करते हैं। सरकार ने अख़बार से लेकर चपरासी तक के जो 'रेट' निश्चित किए हैं, वे हम बराबर देते रहते हैं। चंदा भी हम हैसियत के मुताबिक देते हैं। और भी जो हुक्म होगा, हम करने को तैयार हैं। जब हम कानून का इस हद तक पालन करते हैं, तब हमारे पास अनाज दबा रह ही नहीं सकता। हम पर झूठा इल्ज़ाम लगाया जा रहा है।

आठवें दिन मैं फ़िर साहब के पास पहुंचा-साहब, जांच पूरी हो गई?

वे बोले-हां, पूरी कर ली है। मालूम हुआ है कि दोनों के पास स्टॉक नहीं है।

मैंने पूछा-जांच किसने की?

उन्होंने कहा-यह बात उनकी कैफ़ियतों से ही सिद्ध होती है।

मैंने कहा-जनाब, यह बात झूठ है। पांच सौ वाले ने तो स्टॉक यहां-वहां कर दिया है। पर पांच हज़ार वाले का गोदाम भरा है। आप अभी चल कर ज़ब्त कर सकते हैं।

साहब ने कहा-जब कुछ है नहीं, तो ज़ब्त क्या किया जाएगा? मुझे तो राजधनी से ख़बर मिली है कि उसके पास कुछ नहीं है।यहां ख़बर जब राजधानी से आती है, तब सच होती है। हमारी सब ख़बरें उससे कट जाती हैं। राजधानी की एक आंख हमारी लाख आंखों से तेज़ होती है। जब वह खुलती है, हमारी चौंधिया जाती हैं।

मैं निराश हो कर लौट आया।

दूसरे दिन साहब ने मुझे बुलाया। बड़े प्रेम से समझाया-देखो भाई, बुरा मत मानो। शासन ने तुम्हारी इच्छा पूरी कर दी है। तुम तो दो व्यापारियों को गिरफ़्तार करवाना चाहते थे, हमने आज तुम्हारे लिए तीन व्यापारी गिरफ़्तार कर लिए हैं। एक के पास आधा बोरा चावल का जंगी स्टॉक दबा पड़ा था, दूसरे के पास बीस किलो और तीसरे के पास पंद्रह किलो। अब तो तुम्हें संतोष हो गया होगा।

दो-तीन दिन बाद शर्मा मास्टर रोते हुए आए। कहने लगे-आपने मुझे फंसा दिया। मेरी नौकरी अब जाने वाली है।

उन्होंने एक काग़ज़ मुझे दिया। स्कूल के मैनेजर की शर्मा मास्टर के नाम चेतावनी थी कि आजकल आप स्कूल का काम छोड़ कर राजनीति में भाग ले रहे हैं। यदि आपने अपने को नहीं सुधारा, तो नौकरी से निकाल दिए जाएंगे।

मेरे पीछे सरकार के गुप्तचर विभाग का एक आदमी लग गया। मैं उसे पहचानता था। पूछा-क्यों भाई, मेरे पीछे क्यों वक़्त बर्बाद कर रहे हो?

उसने कहा-आप पर नज़र रखने का हुक्म हुआ है।

मैंने पूछा-मगर मैंने ऐसा क्या किया है?

उसने जवाब दिया-सरकार को ख़बर मिली है कि आप राष्ट्र-विरोधी काम करते हैं।

मेरे मुह से निकला-राष्ट्रविरोधी। तो क्या वे लोग ही राष्ट्र हैं?

उसने पूछा-कौन लोग? मैं चुप हो गया। इसे क्या मालूम? ■